Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Recognized International Peer Reviewed Journal Impact Factor 5.98
Online Available at www.cmrj.in
ISSN No. 2456-1665

ममता कालिया के कहानियों में सामाजिक चेतना

शीतल श्रीनिवास बियाणी
हिंदी विभागाध्यक्षा एवं सहयोगी प्रोफेसर
राजर्षी शाहू कला एवं विज्ञान महाविद्यालय वाळूज
तह. गंगापूर, जि. छत्रपती संभाजीनगर (महाराष्ट्र)
sheetalbiyani0610@gmail.com
मो.नं.- ८२०८४२५४६५

प्रस्तावना :

आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में ममता कालिया का नाम एक सशक्त और सजग रचनाकार के रूप में लिया जाता है, जिन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से समाज की बदलती संरचनाओं, मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताओं और विशेषतः नारी के बहुआयामी अस्तित्व को संवेदनशीलता के साथ अभिव्यक्त किया है। उनके लेखन में नारी केवल करुणा या त्याग की प्रतिमा नहीं, बल्कि संघर्षशील, आत्मनिर्भर और आत्मसम्मान के प्रति सजग व्यक्तित्व के रूप में उभरती है।ममता कालिया के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना का स्वर विशेष रूप से नारी विमर्श के संदर्भ में मुखर होता है। वे स्त्री की पारंपरिक भूमिकाओं पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए उसके अधिकारों, स्वतंत्रता और पहचान की खोज को प्रमुखता देती हैं। उनकी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री-जीवन की यथार्थपरक स्थितियाँ—जैसे पारिवारिक दायित्व, आर्थिक दबाव, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक रूढ़ियाँ और मानसिक द्वंद्व—सजीव रूप में सामने आती हैं।ममता कालिया का कथा साहित्य न केवल नारी की स्थिति का चित्रण करता है, बल्कि समाज में व्याप्त असमानताओं और विसंगतियों को उजागर कर परिवर्तन की आवश्यकता की ओर भी संकेत करता है। उनकी रचनाएँ सामाजिक चेतना का वह स्वर प्रस्तुत करती हैं, जो नारी को 'वस्तु' से 'व्यक्ति' के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ममता कालिया के कहानियों का यह साहित्यिक संसार अधिकतर नारी-जीवन को केन्द्र में रखकर वर्तमान जीवन की भयावहता तथा संघर्ष परायणता को यथार्थ रूप में प्रदर्शित करता है।

नारी की स्थिति और स्तर से सामाजिक सम्बन्ध ही नहीं, समस्त साहित्य का सृजन हुआ है। इस संदर्भ में विशेषकर सन साठ के अनन्तर हिंदी कथा-साहित्य में नारी-चेतना की अभिव्यक्ति में महिला कथाकार ममता कालिया का प्रयास सराहनीय रहा है। स्वयं संवेदनशील नारी होने के नाते उन्होंने नारी-अस्मिता की तलाश बड़ी गहराई और छानबीन के साथ की। नारी के जिस परम्परागत मध्ययुगीन स्वरूप से हम परिचित थे वह उनकी कहानियों में छूट चुका है तथा नारी के आधुनिक रूप को तथा उसकी सामाजिक स्थिति को बड़ी गहराई से चित्रित किया है। नये जीवन यथार्थ और मूल्यगत संकट के परिप्रेक्ष्य में ममता जी ने नारी की बदली हुई जीवन स्थितियों और सम्बन्धों में व्याप्त तनाव, विघटन और जटिलता को देखा और पहचाना है। अतः उनकी कहानियों में इस विघटित और तनाव भरे सम्बन्धों का एक छोर आधुनिक नारी की अस्तित्व चेतना से जुड़ गया है तो

दूसरा सामाजिक और आर्थिक चेतना से।चेतना मनुष्य की वह विशेषता है जो उसे जीवित रखती है और जो उसे व्यक्तिगत विषय में तथा अपने वातावरण के विषय में ज्ञान कराती है।

ममता ने नारी की सामाजिक स्वतंत्रता पर विशेष बल दिया है। उन्होंने सामाजिक विधानों में नारी की पराधीन जिन्दगी को करीब से देखा था, देखा ही नहीं अनुभव भी किया था। नारी के प्रति प्राप्त होने वाली समाज को व्यावहारिक विसंगातियों को उन्होंने अनुभव किया था। सम्भवतः इसी कारण उनकी कहानियों में नारी की सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण विस्तार से प्राप्त होता है। ममता जी ने स्वयं स्वीकार किया है "जितना यह सच है उतना ही यह भी कि केवल भाव-बोध के सहारे नहीं टिकी रहती कहानी, जब तक उसमें वृहत्तर समय समाज का सरोकार और दृष्टि बोध न हो ।..... शामिल कहानियों के पीछे वे समस्त विसंगतियाँ हैं जिनकी मूक दर्शक बनकर बैठना मुझे गवारा न हुआ।"१

जन्म से मृत्यु तक सी का जीवन इन रीति-रिवाजों को जंजीरी में इस कदर जकड़ा रहता है कि उसको पूर्ण सामाजिक स्वतंत्रता की कल्पना करना सम्भव नहीं। इस संदर्भ में विशेषकर ममता जी की कहानियों नारी के स्वतंत्र सामाजिक व्यक्तित्व के आधार पर विकसित हुई हैं। जिसमें नारी के सामाजिक यथार्थ, उसकी मानसिकता, जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण एवं मौजूदरा व्यक्तित्व में परिवर्तन की चेतना दिखाई देती है।नारी आज पुरुष के समान ही घर की चौखट लाँपना चाहतीं है।चारदीवारी की बेड़ियों वह तोड़ना चाहती है। समाज में अपना स्थान महसूसकरना चाहती है। 'बसन्त-सिर्फ एक तारीख' कहानी की नायिका 'चन्दा' महीनों बाद घर से बाहर निकली है। यानी चौक के आगे। इसके आगे जाने की न ही नौबत आयी थी और न ही उसे इतनी स्वतंत्रता ही प्राप्त हुई थी। आज व समाज में आकर अपनी महत्वाकांक्षाओं को विस्तृत रूप देना चाहती है।'सेमिनार' कहानी की कथाकार नायिका 'पाखी' समाज में रहकर समाज का भला चाहती है ।"आपके पास अपनी विचारधारा ही न हुई तो आप समाज को क्या देंगे, सिर्फ अपनी कुण्ठाएँ और बीमार दृष्टि ?"२ और नारी स्वातंत्र्य का समाज के साथ सम्बन्ध जोड़ते हुए स्वयं भी स्वतंत्रता का अनुभव करना चाहती है।

विवाह के पश्चात नारी अपने बदलते परिवेश एवं भूमिकाओं में अपनी आकांक्षाओं को यथावत बनाए रखना चाहती है।सामाजिक सम्बन्धों पर जब पारिवारिक सम्बन्धों का अतिक्रमण होता है तब ।दोहरी मानसिकता से नारी का मानसिक स्तर पर असन्तुलित बने रहना स्वाभाविकही है। 'बड़े दिन की पूर्व साँझ' कहानी की नायिका को इसी अटपटी हालत का सामना करना पड़ता है।समाज के रिवाजों का त्याग कर कुछ/क्षण के लिए स्वतंत्रता का अनुभव करना चाहती है।'बच्चा' कहानी की माँ परिवार की दैनिकता में कुछेक क्षणों के लिए सामाजिक जीवन-शैली को अपनाना चाहती है। किन्तु पति के विसंगत व्यवहार के कारण वह कभी परिवार की परिधि से मुक्त नहीं हो पाती। वह कहती है - "देखा जाय तो यह सच था। हम दिन प्रतिदिन के संघर्षों से इतना टूट, पिचक गए थे, हमें खुद नहीं पता था कि जीवन की आदर्श शक्ल क्या होती है। अखबारों में घपले-घोटालों के किस्से पढ़ते, शहर में हिंसा और दंगे के चक्रवात झेलते, हम किसी विराट स्वप्न से वंचित अपनी आँखों को एक निहायत धुँधला, काला मोतिया भरा अस्तित्व सौंप रहे थे ।....हम कैलेंडर, घड़ी और टी. वी. के सहारे जीने को कृत-संकल्प थे।"३ उसकी पारिवारिक विवशता में सामाजिक स्वतंत्रता की चेतना मुखरित होती है।

नारी-स्वतंत्रता आज वर्तमान जीवन के चिन्तन का प्रमुख विषय है। 'आजादी' कहानी की बूढ़ी दादी भले ही स्वतंत्रता दिवस के परिपार्श्व को न समझती हो, किन्तु अज्ञान के अनुपात से अपने पराधीन जीवन को महसूस करना नहीं भूलती। पन्द्रह अगस्त के दिन सुबह-सुबह जलसे में सफेद कपड़े पहन कर स्कूल जाने वाली पोती को दादी कहती है "री मुन्नी, थोड़ी आज़ादी मेरे लिए भी ले आना पुड़िया में बाँध कै।" ४ दादी आज तक परिवार में केवल सामान्य दर्जे को एक इकाई बनी रही थी। आज वह अपनी सामाजिक स्वतंत्रता के दायित्व को महसूस करना चाहती है। बढ़ी दादी द्वारा स्वतंत्रता या आजादी की माँग, नारी के सामाजिक अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न अवश्य लगा देती है।'लैला मजनू' कहानी की नायिका 'शोभा' अपने संसार को परिपूर्ण बनाने के लिए स्वतंत्रता चाहती है। सामाजिक सम्बन्ध की अतिशयता में वह अपने पति के साथ संवेग, आवेग से आप्लावित नहीं हो पाती। ममता कालिया की कहानियों में अधिकांश नारियाँ बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में स्वयं स्वतंत्रता की माँग करती हुई दिखाई देती है। उसकी चेतना परिवार की सीमाओं को लाँधना चाहती है। नवीन भाव-बोध की प्रक्रिया में वह किसी भी बन्धन को स्वीकार नहीं करना चाहती।

नारी मन की तहों में दूर उतरकर उसकी कोमल भावनाओं को समझने, जानने एवं परखने की शायद ही ईमानदार कोशिश की गई है।परिवार में नारी की भावनाओं को प्रश्रय न मिलने पर उसके द्वारा परिवार के बाहर आकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अपनी भावनाओं को पूर्णत्व प्रदान करने का किया गया प्रयास स्वाभाविक हो माना जाएगा। 'मन्दिरा' कहानी की नायिका मन्दिरा स्वच्छन्द भावनाओं वाली युवती है।'बसन्त-सिर्फ एक तारीख' कहानी की नायिका चन्दा अपनी पारिवारिक समस्याओं के बावजूद घर से बाहर निकलकर इस वास्तविक जगत का स्वच्छन्द रूप से अनुभव करना चाहती है। वह कहती है "मेरी संवेदना वसन्त का आनन्द ले रही थी। मेरी चेतना एक महत्वाकांक्षी योजना बना रही थी ।.... जिस दिन यह जानकारी मुझे मिली, मेरे आह्लाद की कोई सीमा न रही।"५ और आज वह उसी उत्साह से अपनी सीमाओं को तोड़ना चाहती है, जिसमें बरसों तक उसके अस्तित्व को उपेक्षित किया गया था।

'बीमारी' कहानी की बीमार नायिका अपनी असंख्य यातनाओं के बावजूद भी अपने घर में नौकर नहीं रखना चाहती क्योंकि समाज की सन्देह-दृष्टि का उसे ज्ञान हो चुका है।उसकी इच्छा भी होती है नौकर रखने की, समाज की दुतर्फा मानसिकता से वह परिचित है।"अकेली लड़की के घर नौकर के साथ क्या-क्या अफवाहें जुड़ जाती है। नौकरानियों से मेरी बहुत जल्द लड़ाई हो जाया करती थी। वे चार होती थीं और झूठी ।... डॉक्टर ने अब तक दवा भी खुद मँगवा कर दी थी।"६समाज की इस नैतिकता सम्बन्धी दोहरी भूमिका को देखकर वह खिन्न रह जाती है। उसकी चेतना नैतिक विचारों के तह तक जाकर उसका अनुसन्धान करना चाहती है।

'आपकी छोटी लड़की' कहानी की नायिका 'दुनिया' नैतिक विचारों से ओतप्रोत हैं। छोटी सी उम्र में भी वह समाज के अनैतिक विचारों का निरन्तर चिन्तन करती रहती है।टुनिया ने एक बार और नल खोलने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि रामजी ने अपने पजामे की ओर इशारा किया और अश्लील ढंग से मुस्करा कर कहा, 'लो इससे भर लो।" टुनिया की चेतना कुछ क्षण निष्प्राण हो गयी, "दुनिया कुछ समझ नहीं पायी, पर जो कुछ उसने देखा उससे घबराकर वह दशहत से चीखती भाग खड़ी हुई । बाल्टी वापस उठाने का किसे होश था।"७ वह

समाज में गिरते नैतिक मूल्यों का चिन्तन प्रारम्भ कर देती है। अतः अपने प्रति पुरुषों द्वारा हो रहे अनैतिक व्यवहार का बोध उसे हुआ है।'मेला' कहानी की सहनायिका मौन सुन्दरी समाज के इसी अनैतिक व्यवहार की शिकार है।ममता की कहानियों में समाज को अनैतिक दृष्टि का विस्तार से वर्णन हुआ है। उनकी कहानियों में अधिकांश नारियों अपने प्रति पुरुषों द्वारा किए गए अनैतिक व्यवहार का विरोध करती है। उनका यह नैतिक-बोध पुरुष समाज के लिए अवश्य चिन्तन का विषय बना रहेगा।

निष्कर्ष :

अंततः यह कहा जा सकता है कि ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी विमर्श के माध्यम से सामाजिक चेतना का सशक्त और प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण हुआ है। उनकी रचनाएँ केवल स्त्री की पीड़ा का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि उसके भीतर छिपी शक्ति, आत्मविश्वास और संघर्षशीलता को भी उजागर करती हैं।वे स्त्री को परंपरागत बंधनों से मुक्त कर उसे अपने निर्णय लेने वाली स्वतंत्र इकाई के रूप में स्थापित करती हैं। उनके साहित्य में नारी की चेतना व्यक्तिगत स्तर से आगे बढ़कर सामाजिक और वैचारिक स्तर तक विस्तृत होती है, जो समाज में समानता, न्याय और संवेदनशीलता की स्थापना की ओर अग्रसर है।इस दृष्टि से, ममता कालिया का कथा साहित्य न केवल नारी विमर्श को समृद्ध करता है, बल्कि समग्र सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण वैचारिक हस्तक्षेप भी प्रस्तुत करता है।

संदर्भ:

1. थिएटर रोड के कौवे : ममता कालिया, भूमिका,पृ 7
2. ममता कालिया की कहानीयां:खंड 2,ममता कालिया ,पृ 16
3. वहीं, पृ 219
4. वही , खंड १, ममता कालिया,पृ 194
5. वहीं, पृ 211
6. वहीं, पृ 44
7. वहीं, पृ 243